ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय

पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)

फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

miegkfun'kd ¼—f"k ekl e foKku½] Hkkjr ekl e foKku foHkkx] iq.k   fun'kd] ekl e dUnz] ngjknw

o"kZ 27	vad% 91	cqyfVu vof/k% 17 & 21 uoEcj] 2018	fnu% 'kØokj	fnukad% 16 uoEcj] 2018

ekl e iokZuqeku%

भारत सरकार के iFoh foKku ea=ky; द्वारा वित्त पोषित एवं Hkkjr ekl e foKku foHkkx द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत jk"Vh; ekl e iokZuqeku dUnz] Hkkjr ekl e foKku foHkkx] ekl e Hkou] ubZ fnYyh द्वारा पूर्वानुमानित तथा ekl e dUæ] ngjknw द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा uSuhrky ftys es vxys ikp fnuks में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

iokZuqekfur ekl e rRo	ekl e iokZuqeku&uSuhrky				
	17/11/2018	18/11/2018	19/11/2018	20/11/2018	21/11/2018
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	17	17	17	18	18
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	7	7	8	8	8
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	आंशिक बादल	मध्यम बादल	साफ	साफ
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	85	85	80	80
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	45	45	40	35
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	006	004	006	008
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (9 – 15 नवम्बर, 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान में आंशिक बादल छाये रहे तथा अधिकतम तापमान 14.5 से 16.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 4.5 से 7.2 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

Ñf"k ekl e ijke'kZ

Qly çcU/k%

- ❖ गेहूँ की बुवाई करें। फसलों की बुवाई से पूर्व बीज उपचार अवश्य करें।

- गेहूँ के बीज का टाइकोडर्मा 5 ग्राम + सूडोमोनास 5 ग्राम/1 ग्राम बीज की दर से उपचारित करें।
- लूज स्मट प्रभावित क्षेत्रों में बीज का उपचार कार्बन्डाजिम काबेक्सिन या टैवूक्लाजोन 2डी एस का 2. 5ग्राम/कि0ग्रा0 की दर से करें।
- दलहनी फसलों हेतु थीरम 2 ग्राम + कार्बन्डाजीन 1 ग्राम/किग्रा बीज तथा तिलहनी फसलों में मैटालेक्जिल 6 ग्राम/किग्रा बीज की दर से उपचारित करें।
- गेहूँ एवं जौ की बुवाई के तुरंत बाद या 3 दिन के अंदर उचित नमी की अवस्था में पेन्डीमेथिलीन 30 ईसी की 2.5 से 3.3 लीटर मात्रा को 750 लीटर पानी में घोल बनाकर अथवा बुवाई के 30–35 दिन बाद वैस्टा शाखनाशी की 400 ग्राम दवा को 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। जिससे एक वर्षीय घासकुल एवं कुछ चौड़ी पत्ति वाले खरपतवारों का नियंत्रण किया जा सके।
- किसान भाई अपने क्षेत्रों के लिए अनुमोदित प्रजातियों की ही बुवाई करें।
- जैविक खेती करने वाले किसान भाई सभी फसलों हेतु ट्राइकोडर्मा हरजियानम + सोडोमोनास के 5–5 ग्राम/कि0ग्रा0 बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। तथा पोषक तत्वों की पूर्ति वर्मीकम्पोस्ट या सड़ी हुई गोबर की खाद एवं जैव उर्वरक के द्वारा करें। भूमजनित बीमारियों की रोक–थाम के लिए 250ग्राम ट्राइकोडर्मा + 250 ग्राम सोडोमोनास जैव अभिक्रता से प्रति क्विंटल की दर से वर्मीकम्पोस्ट एवं गोबर की खाद को उपचारित कर एक सप्ताह के लिए छाया में रखें तथा बुवाई से पूर्व खेत में अच्छी प्रकार से मिला दें।
- दलहनी फसलों में खरपतवार नियंत्रण हेतु अगर मजदूर उपलब्ध हों तो पहली निराई, बुवाई के 20–25 दिन बाद और दूसरी 35–40 दिन बाद करें।
- चनें में सिंचित दशा में फ्लूक्लोरोलिन 1.7 लीटर अथवा ट्राईफलूरोलिन शाखनाशी की 1.5 लीटर मात्रा को 800 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई से पूर्व छिड़काव करने से खरपतवारों का नियंत्रण हो जाता है।

m|kuçcU/k

- मिर्च एवं टमाटर में उपरी पत्तियॉ सिकुड़ने या चित्तकबरी होने की स्थिति में संक्रमित पौधो कों निकालकर नष्ट कर दे तथा रोगवाहक कीटो के नियंत्रण हेतु किसी सर्वांगी कीटनाशी का छिड़काव करे।
- गोभी वर्गीय सब्जियो में पत्ती धब्बा रोग के नियत्रंण हेतु मैन्कोजेब का 2.5 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- बीन एवं मटर की फलियो की तुड़ाई करें।
- स्नोबॉल फूलगोभी में यूरिया की आपूर्ति के साथ गुड़ाई करे।
- बीज उत्पादन हेतु मूली, शलजम, एवं गाजर की जड़ो का चुनाव कर नये खेतो में प्रतिरोपण करे।
- घाटी क्षेत्रो में लहसुन की बुवाई करे।
- मध्यम पर्वतीय क्षेत्रों में बैंगन एवं शिमलामिर्च के फलों की तुड़ाई करें तथा रोग युक्त फलो/पत्तियों या पौंध अवशेषों को खेत से बाहर करें।
- खाद उर्वरक तथा फफूदीनाशक/कीटनाशक दवाईयाँ जो गढ्ढों में भरते समय मिट्टी में मिलाई जाती है का प्रबन्ध उचित मात्रा में कर लें।
- पर्णपाती पौधों में लगाये जाने वाले पौधों की उत्तम किस्मों का आरक्षण अभी से कर ले अन्यथा बाद में अच्छे पौधें न मिलने पर परेशानी हो सकती है।
- थाले बनाने का कार्य प्रारम्भ करें तथा पेड़ के तनों पर चूना + नीला थोथा तथा अलसी के तेल क्रमशः 30 कि0ग्रा0, 500ग्रा0 और 500 मि0ली0 को 100 लीटर पानी में घोलकर जमीन से 2.3 फिट तक पुताई का कार्य करें।

Ik'kikyuicU/k

- जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पशुधन स्वस्थ रहे और उससे लगातार आपको सही उत्पादन प्राप्त होता रहें।
- इस माह में जानवरों में खासकर भैसों में प्रसव दर अधिक बढ़ जाती है इसको ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।

- भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15 सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।
- पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते है, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।

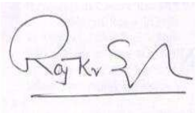

Mk0 vkj0 d0 flag
ik/;kid ,o fifly ukMy vf/kdkjh
xkeh.k df"k ekle lok]
xk- c- iUr df"k ,o ik|k- fo’ofo|ky;] iUruxj